SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले में पर्यटन की संभावनाएँ

ममता देवांगन, शोधार्थी, भूगोल विभाग
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
कुबेर सिंह गुरुपंच, (Ph.D.),
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
ममता देवांगन,
कुबेर सिंह गुरुपंच, (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/04/2023
Revised on : -----
Accepted on : 10/04/2023
Plagiarism : 00% on 01/04/2023

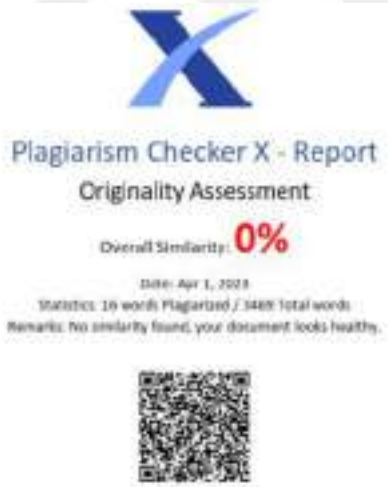

शोध सार

'पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। दुनिया के विभिन्न देशों और स्थानो की यात्रा करने के लिए पर्यटन बड़े पैमाने पर होता है। हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में भी पर्यटन स्थल प्रमुख रूप से देखा जाता है। छत्तीसगढ़ अपने आप में हरी–भरी वादी पर्वत, पठार, मैदान, घने जंगल गुफाएं नदियों की कल–कल करती धारा, धार्मिक स्थल, मनोरंजन के लिए पर्यटन स्थल प्रमुख है जहाँ लोग अपने आनंद की प्राप्ति एवं नयी–नयी खोज के लिए जाते है। वैसे तो छत्तीसगढ़ पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य की नव निर्मित जिला मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी छत्तीसगढ़ राज्य का 29वां जिला है। यहां के पर्यटन स्थल छत्तीसगढ़ के पर्यटन मानचित्र में प्रदर्शित तो नही है परन्तु यहां के पर्यटन स्थल कुछ समय पहले ही अस्तित्व में आया है। मोहला–मानपुर– अंबागढ़ चौकी तीन तहसीलों से मिलकर बना तथा यहां प्रकृति का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। अंबागढ़ चौकी में स्थित मोंगरा बैराज परियोजना के बारे में पिकनिक स्पॉट के पर्यावरणीय दृष्टिकोण से एवं जल संसाधन की दृष्टिकोण से भी यहां के पर्यटन स्थल एवं यहां की समस्याएँ एवं संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। अंबागढ़ चौकी में कान्हे मंदिर, माँ देश फिरंतीन मंदिर का अध्ययन, दन्तेश्वरी मंदिर का अध्ययन, आमागढ़ की गुफा का अध्ययन, मोहला में माँ छुरिया देवी मंदिर का अध्ययन, तथा मानपुर में कोटरी नदी, शिवलोक, सीतानहर, मुण्ड़ा पहाड़ी, भीमखोज एवं राजघाट जैसे पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों का अध्ययन किया गया है। मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी नवनिर्मित जिला होने के कारण यहां के पर्यटन स्थलों के बारे में पहले की अपेक्षा

जिला बनने के बाद यहां के पर्यटन स्थल विकास की ओर अग्रसर हो रहा है तथा यहां के पर्यटन स्थलों से स्थानीय लोगों के साथ–साथ दूर–दूर के लोगो को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है तथा लोगों को प्रकृति के करीब ला रहा है।

मुख्य शब्द

परलकोट (कोटरी नदी), मोंगरा बैराज बांध, पर्यटन, तीर्थस्थल.

प्रस्तावना

मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी क्षेत्र पर्यटन क्षेत्रों के साथ–साथ मनोरंजन, प्राकृतिक खुबसुरती, शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। इस जिले के किसी भी क्षेत्र में चले जायें तो प्रकृति का एक से बढ़कर एक नजारा देखने को मिलता है। नक्सली प्रभावित क्षेत्र एवं आदिवासी जनजाति क्षेत्र होने के कारण यहां के लोग पिछड़े हुए है इसीलिए बहुत अधिक सालों के प्रयासों के बाद मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी को जिला बनाये जाने की मांग चलती रही थी जिसके फलस्वरूप छत्तीसगढ़ के 29 वां जिला के रूप में यह अस्तित्व में आया जो कि यहां के लोगो के जीवन स्तर एवं इस क्षेत्रों के विकास के लिए यह जरूरी भी था। मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी नक्सली प्रभावित क्षेत्र होने के कारण बाहर के यात्री यहां आने के लिए थोड़ा हिचकिचाते है, परन्तु यात्री यहां का नजारा देखने के लिए दूर–दूर से आते है। मनुष्य भाग–दौड़ भरी जीवन में अपने काम में इतना व्यस्त हो गये है कि कुछ समय के बाद अपने तनाव एवं भाग दौड़ भरी जीवन से दूर प्रकृति की ओर जाना पसंद करते है। आधुनिक काल में नगरीकरण एवं औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया है जिससे प्राकृतिक वातावरण का ह्रास हुआ है, ऐसे में लोग अपने तनाव को दूर करने के लिए प्रकृति के करीब जाना पसंद करता है तथा मनोरंजन के लिए पर्यटन स्थलों एवं धार्मिक स्थलों में भ्रमण करने के लिए जाते है।

उद्देश्य

1. मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले के परलकोट (कोटरी नदी) एवं मोंगरा बैराज बांध का अध्ययन करना।
2. मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले के तीर्थ स्थलो, का अध्ययन करना।
3. इस जिले में होने वाली पर्यटन विकास में समस्या एवं समाधान का अवलोकन करना।

अध्ययन के क्षेत्र

मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिला राजनांदगांव जिले से अलग होकर बना है जिसकी घोषणा राज्य सरकार ने 15 अगस्त 2021 में की गई तथा यह जिला राजपत्र में 1 सितम्बर 2022 में अस्तित्व में आया। दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के 29 वां सबसे बड़ा जिला, दुर्ग संभाग का 6 वां सबसे बड़ा जिला है। यह जिला शिवनाथ नदी और परटकोट नदी (कोटरी नदी) के तट पर बसा हुआ है। सीमावर्ती क्षेत्र कांकेर–बालोद–राजनांदगाँव –महाराष्ट्र राज्य से कुल क्षेत्रफल 2,466 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर फैला है। 2022 की अनुमानित जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 3 लाख के करीब है जो कि छत्तीसगढ़ राज्य में सबसे अधिक लिंगानुपात वाले जिले में गिना जाता है। यहां की साक्षारता दर 68 प्रतिशत है। इस जिले में 3 विकासखंड एवं 5 तहसील आते है जिनमें मोहला– मानपुर–अंबागढ़ चौकी, औंधी एवं खड़गांव तहसील आते है। इसके अलावा इन तहसीलों में 499 गांव एवं 185 ग्राम पंचायत आते है। इंद्रावती नदी उद्भव पानाबरस की पहाड़ी से हुआ है जो कि अंबागढ़ चौकी से राजनांदगाँव तथा राजनांदगाँव से दुर्ग तथा दुर्ग से शिवरीनारायण होते हुए महानदी में समाहित हो जाती है। इंद्रावती नदी की सहायक नदी कोटरी नदी भी इसी जिले में बहती है।

शोध विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया। नदियों कें अध्ययन क्षेत्रों के लिए द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया जिनमें छत्तीसगढ़ सामान्य अध्ययन तथा कार्यालय

प्रमुख है। पर्यटन स्थलों एवं तीर्थ स्थलो की जानकारी के लिए इंटरनेट की सहायता ली गयी है।

मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले के पर्यटन क्षेत्र

मोहला तहसील के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र

माँ छुरिया देवी मंदिर

मोहला तहसील में पारम्परिक एवं ऐतिहासिक मंदिर माँ छुरिया देवी का सुप्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर की अनेकों कहानियाँ सुनने को मिलती है जहां दूर–दूर से श्रद्धालु दर्शन करने आते है और अपनी–अपनी मनोकामना पूर्ण करते है। यह मंदिर 50 साल पुराना है, यहां दन्तेवाड़ा कि माँ दन्तेश्वरी विराजित है। इस मंदिर एवं माता का नाम छुरिया गांव के कारण छुरिया माता के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर की प्रसिद्धी दूर–दूर तक फैली हुई है जैसे– राजनांदगाँव, दुर्ग, रायपुर, कांकेर, डोंगरगढ़ आदि। यह मंदिर राजनांगाँव रोड़ पर रोड़ के दाहिनी किनारे पर स्थित है। इस मंदिर से गुजरने वाले लोग माँ छुरिया के दर्शन किये बिना आगे नही बढ़ते है। यहां दो मंदिर है जिसमें माता दो बहने है, छोटी माता नीचे वाली मंदिर में विराजी है तथा बड़ी माता ऊपर पहाड़ी पर विराजी है। यह मंदिर घने जंगलो के बीच स्थित है तथा यह स्थान शेर, भालू, चीता, जैसे जानवरों का स्थान है। यहां चैत्र एवं कुंवार दोनों नवरात्र में मेला लगता है तथा श्रद्धालु बड़ी श्रद्धा के साथ दूर–दूर से यहां आते है। दोनों नवरात्र में यहां ज्योति कलश स्थापित किया जाता है। नीचे वाली मंदिर में मुख्य द्वार शेर के मुख का है, मंदिर के ऊपर में माँ दुर्गा की मुर्ति, दाये भाग पर माँ सरस्वती की मुर्ति, बायी ओर माँ काली की मुर्ति स्थापित है। मंदिर के अंदर मुख्य भाग पर माँ छुरिया देवी विराजित है जहां दायी ओर हाथी एवं बायी ओर घोड़ा स्थापित है। मंदिर के दीवारों में बहुत ही सुन्दर कारीगरी की गई है। नीचे मंदिर के पीछे पहाड़ी पर बड़ी छुरिया माता विराजित है। सीढ़ियों के रास्ते ऊपर वाली मंदिर पर जाया जाता है, जहां पहले बहुत बड़ा बरामदा है फिर मंदिर के बाये भाग में माँ काली की मुर्ति स्थापित है। मंदिर के अंदर मुख्य द्वार के आगे ही माँ छुरिया देवी विराजित है। चारों ओर घने जंगल पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र अद्भूत एवं आकर्षित लगता है। नीचे मंदिर के सामने मंदिर का प्रांगण है जहां श्रद्धालु विश्राम करते है। मंदिर के दायी ओर अभी राम मंदिर का कार्य चल रहा है तथा राम मंदिर के सामने थोड़ी दूरी पहाड़ी पर भोले नाथ का मंदिर भी है।

(स्रोतः स्वयं के द्वारा लिया गया चित्र)

मानपुर तहसील के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र

कोटरी नदी

इस नदी का प्राचीन नाम परलकोट नदी है तथा इसे कोटरी नदी के नाम से जाना जाता है। इस नदी का उद्गम दल्ली राजहरा की पहाड़ी से हुआ है। यह नदी इन्द्रावती की सहायक नदी है तथा इन्द्रावती नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है जो कि इन्द्रावती नदी में (बीजापुर) में जाकर समाहित हो जाती है। कोटरी नदी बेसीन छत्तीसगढ़ के ''दक्षिण–पश्चिम'' दिशा में स्थित है, इसकी लम्बाई 135 कि.मी. है, यह राजनांदगाँव, नारायणपुर, बीजापुर, मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले में बहती है। यह नदी मानपुर तहसील से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है जहां प्रकृति का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। इस नदी के तटो पर लोगों का आना–जाना लगा रहता है। यह एक तरह का पिकनिक स्पॉट के रूप में जाना जाता है।

(स्रोतः स्वयं के द्वारा लिया गया चित्र)

शिवलोक शक्तिधाम

शिवलोक शक्ति धाम मानपुर के पश्चिम भाग में स्थित है। यह मानपुर से 1 किमी. दूर दल्ली राजहरा रोड़ पर स्थित है। शिव लोक शक्ति धाम की स्थापना शिव शक्ति जस–सेवा मानस समिति के द्वारा सन् 2000 में की गई है। यह जगह पहाड़ी वनों से समृद्ध होने के कारण प्राकृतिक सौन्दर्य से आकर्षित हुआ और यहां के शिव शक्ति जस सेवा समिति के द्वारा शिव शक्ति धाम की स्थापना की गई।

शिवलोक शक्ति धाम के निर्माण के समय यहां पत्थर होने के कारण इन पत्थरों को काटकर यहां बीचों–बीच भगवान शिव जी की मूर्ति स्थिपित की गई है। यह शिव भगवान जी की मूर्ति 40 फीट लम्बा और 30 फीट चौड़ा है। इसी शिव भगवान जी की मूर्ति के सामने एक बहुत बड़ी शिव ज्योतिर्लिंग विद्यमान है जिसमें शिव रूद्राभिषेक के समय चढाया गया दूध या पानी भूमि में ही विलिन हो जाती है तथा इसी शिव लिंग के सामने नन्दी महाराज जी की मूर्ति हैं।

शिवलोक शक्तिधाम में विभिन्न प्रकार के मंदिर है। यहां भगवान शिव जी की मूर्ति के दायी ओर सांई बाबा जी का मंदिर है। यह सांई बाबा जी की मूर्ति संगमरमर पत्थर से निर्मित है तथा शिव जी की मूर्ति के सामने निचले भाग में बायी ओर संकट मोचन हनुमान जी की मंदिर व दायी ओर गणेश जी की मंदिर है तथा पीछे में एक और मंदिर है जहां शिवलिंग और शेषनाग की मूर्ति है। यह मूर्ति पीतल की है तथा भगवान शिव जी के मूर्ति के पीछे भाग में एक पहाड़ी है जिसका नाम कुंवारी पाठ है, यह कुंवारी पाठ 5 किमी. ऊंची पहाडी है जहां एक गुफा है जिसमें माँ दुर्गा और साथ में लाल झण्ड़ी स्थित है तथा जहां पुजारी जी के रहने के लिए आवास भी बनाया गया है।

शिव लोक शक्तिधाम में चारों तरफ पत्थर ही पत्थर होने के कारण यहां चलने में लोगों को परेशानियां होती थी जिसे ध्यान में रखते हुए शिव शक्ति जस सेवा मानस समिति के द्वारा यहां पत्थरों को काट कर सीढ़ियों का निर्माण किया है।

शिवलोक शक्तिधाम में प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि में मेला लगाता है तथा मानपुर के आसपास के गांव वाले श्रद्धालु भक्त यहां दर्शन के लिए आते है। यहां महाशिवरात्री के दिन पुरा मानपुर हर–हर महादेव, ओम नमः शिवाय के नाम से गुंज उठता है। यहां विभिन्न प्रकार के दुकाने लगती है, झुले आते है जिसका आनंद श्रद्धालु भक्त लेते है तथा इस दिन यहां हवन, पुजन व यज्ञ होता है तथा यहां शिव शक्ति जस सेवा मानस समिति के द्वारा भण्डारा का भी आयोजन किया जाता है।

शिवलोक शक्तिधाम सावन में देखने में बहुत ज्यादा आकर्षित लगता है। सावन में प्रत्येक सोमवार को यहां श्रद्धालु भक्त यहां आकर पुजा अर्चना करते है तथा शिव जी का दूध रूद्राभिषेक किया जाता है। सावन में वर्षा ऋतु के समय यहां पहाडों पर वनों का घना बसाव के कारण हराभरा रहता है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि यहां भगवान शिव जी प्रकृति पर सामाधि लगाये बैठे है, यह शोभा अत्यंत आकर्षित लगता है।

शिवलोक शक्तिधाम के दक्षिण पश्चिम भाग में हैण्ड पम्प के माध्यम से पेयजल की व्यवस्था की गई है। यहां पहाड़ों पर विभिन्न प्रकार के वृक्ष पाये जाते है जिसमें आंवला, रामफल, बेल, सागौन, साजा, बीजा, आदि बड़े वृक्ष पाये जाते है एवं छोटे–छोटे अनेक फूलदार पौधे लगाये गये है। इसी पहाडी भाग में उत्तर दिशा में नवरात्रि पूर्व

में दीप प्रज्वलित करने हेतु कमरो का भी निर्माण किया गया है।

शिवलोक शक्तिधाम के बायी ओर पहाड़ी के निचले भाग में एक नर्सरी बनाया गया है तथा यहां विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण कार्य किया जाता है तथा यहां कई मजदूर कार्य करते है तथा यहां सिचाई कार्य सम्पन्न किया जाता है। यहां रोड़ के आस–पास फसलों की बोवाई के लिए खेत भी स्थित है जहां कृषि कार्य किया जाता है। अतः इस प्रकार स्पष्ट होता है कि यह शिव लोक शक्तिधाम प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त आकर्षित, मोहक एवं शांत वातावरण है जो लोगो का मनमोह लेने वाला है।

(स्रोतः स्वयं के द्वारा लिया गया चित्र)

सीता नहर

सीता नहर मानपुर से 12 किमी की दूरी पर कोराचा गढ़ में स्थित है। यहां तक पहुचने के लिए पक्की सड़के है कोराचा गढ़ तक वाहन में जाने के बाद आगे 1 किमी पैडगरी के रास्ते जाया जाता हैं। यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से अद्भुत है व मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। बड़ी–बड़ी पहाडे, चट्टाने, घने जंगल एवं छोटे–छोटे गांवो के रास्तों से होकर जाया जाता है। बरसात के मौसम में यह चारों ओर से आकर्षित करती है। सीता नहर एक पिकनिक स्पॉट है जहां दिनों–दिन लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही है। यहां ऊपर से जब पानी आती है तो झरने के रूप में बहते हुए नीचे की ओर जाती है। दूर–दूर से लोग यहां पिकनिक मनाने एवं यहां की प्राकृतिक सौदंर्य का नजारा देखने आते है। कुछ सालों में सीता नहर अधिक अस्तित्व में आया है। यहां पिकनिक मनाने के लिए सुन्दर नजारा अक्टुबर से मार्च तक ठीक हैं। वैसे तो साल भर यहां लोगों की संख्या देखने को मिलती है।

(स्रोतः स्वयं के द्वारा लिया गया चित्र)

मुण्डा पहाड़ी

मुण्डा पहाड़ी मानपुर से औंधी रोड पर लगभग 5 किमी. की दूरी पर है तथा IT कॉलेज से थोड़ी दूरी पर स्थित है। यह पहाड़ी को मुण्डा पहाडी इसलिए कहा जाता है क्योकि इस चट्टान पर एक भी पेड़–पौधें नही है सिर्फ चट्टानों की ही बनी यह पहाडी होने के कारण इसे मुण्डा कहा जाता है। यहां चारों तरफ ऊंचे–ऊंचे पहाडों एवं घने जंगलों का मनमोहक नजारा देखने को मिलता है। साल भर लोग यहां पिकनिक मनाने आते है तथा यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द उठाते है तथा यहाँ आसानी से जाया जा सकता है।

राजघाट एवं भीमखोज

भीमखोज कुछ हद तक मुण्ड़ा पहाड़ी जैसा ही है जो शासकीय महाविद्यालय के रास्ते से जाया जाता है। यहां भीम के पैरों के निशान विद्यमान है तथा चारों ओर चट्टानें एवं घने जंगल होने के कारण लोग यहां पिकनिक मनाना पसंद करते है। यह राजघाट मुण्डा पहाड़ी के रास्ते खैरकट्टा से 5 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह प्रकृति के नजारे के बीच एक पिकनिक स्पॉट भी है।

अम्बागढ़ चौकी तहसील के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र

मोंगरा बैराज परियोजना

छ.ग. राज्य में शिवनाथ नदी पर निर्मित, मोंगरा बैराज परियोजना में पानी को मोड़ने में मदद करने वाले कांक्रीट बैराज का निर्माण शामिल है। इस परियोजना में 10 रेडियल गेट्स की स्थापना भी शामिल है। इसकी लंबाई 182.025 मीटर है और भंडारण क्षमता 40.15 मीटर क्यूमेक है। निर्माण सामग्री की आपूर्ति आनंदशील हाइड्रॉलिक्स द्वारा की जाती है। सोमाइंटर प्राइजेज, पुणे द्वारा एग्रो एंजीनियर्स को 15 टन के इलेक्ट्रिकहोइस्ट का काम दिया गया था। बैराज के निर्माण से स्थानीय ग्रामीणों का बड़ा विस्थापन हुआ।

मोगरा बैराज अंम्बागढ़ चौकी से 10 किमी की दूरी पर चिल्हाटी रोड़ से बायी ओर मोंगरा गांव है जहां मोंगरा बैराज परियोजना स्थित है। मोंगरा गांव में यह बांध बना है तो इस बांध का मोंगरा बैराज परियोजना रखा गया है। यहां साल भर पानी भरा रहता है बारिश के मौसम में यहां की सुन्दरता में चार चांद लग जाता है। यहां मोंगरा उद्यान भी बनाया गया है जहां यात्री आराम कर सकते है तथा पिकनिक स्पॉट के लिए भी जाना जाता है। दूर–दूर से लोग पिकनिक मनाने एवं यहां का नजारा देखने के लिए आते है। दूर–दूर तक फैला जल पहाड़ी सुन्दर दिखाई देता है। यह पर्यटक स्थल के रूप में मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी का प्रमुख स्थल है और सबसे बड़ी परियोजना में शामिल है।

कान्हे देश फिरंतीन मंदिर

कान्हे मंदिर देश फिरंतीन मंदिर अंम्बागढ़ चौकी तहसील के अतंर्गत आता है। यह मंदिर अंबागढ़ चौकी से 10 किमी. की दूरी में स्थित है। यहां दो प्रवेश द्वार है दूसरे प्रवेश द्वार के अंदर माँ देश फिरंतीन माता की मूर्ति विराजमान है तथा दीवारों पर बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षित चित्र देखने को मिलती है। वैसे तो यह मंदिर 2001 में बनाया गया है। यहां माँ शीतला देवी 300 साल पहले विराजी है, यहां माँ दन्तेश्वरी माता भी विराजित है तथा यहां राजा महाराजा की मुर्ति भी बहुत ही सुन्दर–सुन्दर बनी हुई है तथा उनके हाथी, घोड़ों की भी मुर्ति बनाकर रखा गया है। मंदिर के बाहर जाने पर बुढ़ादेव का मंदिर स्थापित है तथा गोड़वाना समाज का भवन बना हुआ है। यह मंदिर घने जंगलों के बीच बना हुआ है। यहां दोनों नवरात्र पर्व पर ज्योति कलश जलाया जाता है, श्रद्धालु बड़ी संख्या में माँ देश फिरन्तीन माता के दर्शन पाने आते है। इस मंदिर को राजा महाराजाओं ने बनवाया है और राजा जब युद्ध में जाते थे तो 5–10 यज्ञ करते थे। यह कान्हे मंदिर बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैला है कान्हे मंदिर से जुड़ी अनेक कहानियां है।

(स्रोतः स्वयं के द्वारा लिया गया चित्र)

आमागढ़ गुफा

यह गुफा अंबागढ़ चौकी से लगभग 15–20 कि.मी. की दूरी पर है। आमागढ़ गुफा अंबागढ़ चौकी तहसील की अंतर्गत दुराटोला गांव के पास स्थित है। घने जंगलों के बीच स्थित यह गुफा बहुत ही मनोरम एवं मनमोहक है। इस गुफा के पास माँ अम्बा देवी की मंदिर स्थित है। यही माँ अम्बा देवी के नाम पर अंबागढ़ चौकी नाम पड़ा है। यहां गुफा का रास्ता चट्टानों से होकर जाता है जहां पत्थरों के जगह–जगह टीला मिलता है तथा चारों ओर घना जंगल है। पिकनिक स्पॉट के लिए यह अच्छा पर्यटन स्थल है परंतु यहां वहां के स्थानीय लोगों के साथ जाना बेहतर है क्योकि घने जंगल एवं जंगली जानवरों का इलाका होने के कारण वहां के लोगों की मदद लेनी पड़ती है।

माँ दन्तेश्वरी मंदिर

माँ दन्तेश्वरी माता का मंदिर अंबागढ़ चौकी तहसील में स्थित है। यह मंदिर कान्हे जाने के रास्ते पर स्थित है। मंदिर में सबसे पहले मुख्य द्वार बना है जहां से सीढ़ियों का रास्ता जाता है। मंदिर के बाहर पुजा सामान की दुकाने है। माता के मंदिर तक जाने के लिए दो रास्ते बने है एक सीढ़ी का रास्ता दूसरा साधारण मार्ग है। ऊपर जाने पर गेट लगा हुआ है इसके अंदर मंदिर प्रांगण है फिर ऊपर सीढ़ी से आगे जाना पड़ता है। आधा मार्ग कच्ची पत्थरों का है तथा खड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। कठिन चढ़ाई के बाद माँ दन्तेश्वरी माता का मंदिर आता है। इस मंदिर के ऊपर से अंबागढ़ चौकी को पूरा नजारा देखने को मिलता है। चारो ओर हरियाली, पर्वत, पठार, घने जंगल, नदियाँ देखने को मिलती है। यहां नवरात्र पर्व में मेला लगता है जिसे देखने दूर–दराज से लोग आते है। मंदिर के नीचे प्रांगण में राजा महाराजा, माता रानी की मुर्ति, सैनिकों की मुर्तियाँ स्थापित है।

पर्यटन विकास तथा विकास की समस्या एवं समाधान की संभावनाएँ:

1. नव निर्मित जिला होने के कारण मोंगरा बैराज परियोजना को छोड़ कर बाकी यहां के पर्यटन स्थलों को छत्तीसगढ़ पर्यटन मानचित्र में स्थान नही दिया गया है।
2. पर्यटन स्थलों में पर्यटन नियोजन का अभाव।
3. यह जिला नक्सली प्रभावित क्षेत्र होने के कारण विकास क्रम धीमा है।
4. सार्वजनिक सुविधाओं के अभाव में भी पर्यटन क्षेत्र का विकास नही हो पाया है।
5. यहां पर्यटन स्थलों पर जाने के लिए असुविधा का सामना करना पड़ता है।

समाधान

1. यहां के पर्यटन क्षेत्रों को छत्तीसगढ़ के पर्यटन मानचित्र में स्थान देने की आवश्यकता है।
2. पर्यटन क्षेत्रो के विकास के लिए एवं प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन के लिए उचित नियोजन करना जरूरी है।
3. इस क्षेत्र को नक्सल मुक्त क्षेत्र में परिवर्तित करके पर्यटन का विकास किया जा सकता है।
4. सार्वजनिक सुविधाओं के लिए पर्यावरणीय दृष्टिकोण से उचित प्रबंधन एवं विकास की आवश्यकता है।
5. यहां के पर्यटन क्षेत्रो तक जाने के लिए सुगम रास्तों का निर्माण एवं वाहनों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन क्षेत्र में मोहला–मानपुर–अंबागढ़ चौकी जिले के मोंगरा बैराज परियोजना एवं कोटरी नदी के तटीय क्षेत्रों के विकास एवं समस्या, समाधान का अध्ययन किया गया है। नव निर्मित जिला होने के कारण एवं नक्सली पीड़ित क्षेत्र होने के कारण यहां के विकास की गति धीमी है। यहां पर्यटन स्थलों के विकास होने पर यहां के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, उनके रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठेगा तथा मानव प्रकृति से जुड़ पायेगे।

संदर्भ सूची

1. यादव, सुशील कुमार (2020), पर्यटन विकास की ओर अग्रसर 'बॉदा', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस इन सोशल साईस,* 8(4), पृ. सं. प्श्रै। 219–222.
2. पटेल, हरिराम (2021), *छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन* पृ. सं.–70.
3. गुरूपंच, के. एस. (2022), छत्तीसगढ़ में पर्यटन विकास, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस इन सोशल साइंस,* 10 (1), पृ. स. 12–24.
4. https:// youtu.be/- mGAECTEzwg
5. https:// youtu.be/ VC3IOAAYMMS
6. https:// youtu.be/- XtJ2WENrKW
7. https:// youtu.be/ gEVXbppff4A
8. https:// en. Wikipedia.org

****